RAJYA SABHA

Tuesday, the 30*th March*, 1993/9 *Chaitra*, 1915

The House met at eleven of the Clock,

Mr. Chairman in the Chair.

ORAL ANSWERS TO QUESTION

भारत पर्यटन विकास निगम के होटलों की वित्तीय स्थिति

*441. **श्री शंकर दयाल सिंह** : क्या **नागर विमानन और पर्यटन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में भारत पर्यटन विकास निगम के कुल कितने होटल हैं और गत दो वर्षों के दौरान उनकी वित्तीय स्थिति का ब्यौरा क्या है ;

(ख) गत तीन वर्षों के दौरान उक्त होटलों को हुये लाभ या हानि का ब्यौरा क्या है ; और

(ग) किन-किन संस्थाओं और व्यक्तियों पर भारत पर्यटन विकास निगम के दिल्ली स्थित होटलों की राशि एक वर्ष से अधिक अवधि से बकाया है और ऐसी संस्थाओं और व्यक्तियों पर होटल वार कितनी-कितनी राशि बकाया है तथा उक्त बकाया राशि की वसूली के लिये सरकार क्या कार्यवाही कर रही है ?

नागर विमानन और पर्यटन मंत्री (श्री गुलाम नबी आजाद) : (क) से (ग) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

विवरण

(क) भारत पर्यटन विकास निगम के देश में 26 होटल हैं जिनको वह चलाता है । गत दो वर्षों के दौरान 25 होटलों के कुल व्यापार की जानकारी अनुबंध–। में दी गई है । **[नीचे देखिये]** 26वां होटल जिसका नाम मनाली, अशोक मनाली है, वर्ष 1992–93 के दौरान चालू कर दिया गया है ।

(ख) गत तीन वर्षों के दौरान, इन होटल परिसंपत्तियों पर हुए निवल लाभ/हानि को दर्शाने वाला विवरण अनुबंध–2 में दिया गया है । **[नीचे देखिये]**

(ग) एक विवरण अनुबंध–3 के रूप में दिया गया है जिसमें भारत पर्यटन विकास निगम के दिल्ली स्थित होटलों की विभिन्न श्रेणियों की संस्थाओं और व्यक्तियों की तरफ बकाया राशियों के आंकड़े दिये गये हैं । **[नीचे देखिये]**

बकाया राशियां वसूली करना एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें शामिल हैं – बकाया राशियों का समय-समय पर पुनरीक्षण करना, स्मरण-पत्रों के द्वारा नियमित रूप से लिखा-पढ़ी करना, व्यक्तिगत संपर्क करना तथा जहां कहीं भी आवश्यक पाये जाने पर कानूनी कार्रवाई करना, आदि ।

अनुबंध–I

गत दो वर्षों के दौरान भारत पर्यटन विकास निगम के होटलों का कुल व्यापार

(1990–91 और 1991–92)

(रुपए लाखों में)

क्रम सं०	एकक का नाम	कुल व्यापार	
		1990–91	1991–92
1.	अशोक होटल, नई दिल्ली	1823.69	1980.35
2.	कनिष्क होटल, नई दिल्ली	738.12	819.82
3	जनपथ होटल, नई दिल्ली	560.61	541.40
4.	कुतुब, होटल, नई दिल्ली	261.32	231.30
5.	लोधी होटल, नई दिल्ली	303.52	314.56
6.	रणजीत होटल, नई दिल्ली	178.62	179.14
7.	अशोक यात्री निवास, नई दिल्ली	467.00	482.80
8.	सम्राट होटल, नई दिल्ली	600.01	630.93
9.	होटल आगरा अशोक, आगरा	136.39	158.45
10.	होटल जयपुर अशोक, जयपुर	109.17	130.91
11.	होटल वाराणसी अशोक, वाराणसी	149.59	190.13
12.	लक्ष्मी विलास पैलेस होटल, उदयपुर	117.62	162.42
13.	होटल जम्मू अशोक, जम्मू	66.12	63.09
14.	होटल औरंगाबाद अशोक, औरंगाबाद	85.08	100.42
15.	होटल खजुराहो अशोक, खजुराहो	36.45	47.53
16.	होटल एयरपोर्ट अशोक, कलकत्ता	722.30	718.96
17.	होटल कलिंग अशोक, भुवनेश्वर	75.96	92.04
18.	होटल पाटलिपुत्र अशोक, पटना	56.64	98.21
19.	होटल बोधगया अशोक, बोधगया	39.91	68.49
20.	होटल अशोक, बंगलौर	491.45	593.18
21.	कोवलम अशोक बीच रिसॉर्ट, कोवलम	337.78	381.57
22.	ललिता महल पैलेस होटल, मैसूर	182.43	220.26
23.	होटल हसन अशोक, हसन	52.84	65.00
24.	होटल मदुरै अशोक, मदुरै	68.38	73.26
25.	टेम्पल बे अशोक बीच रिसॉर्ट, मामल्लापुरम	42.23	50.26
		7703.23	8424.48

टिप्पणी : होटल मनाली अशोक, मनाली को वर्तमान वर्ष में 20 मई, 1992 को चालू किया गया था, इसलिए इसे विवरण में शामिल नहीं किया गया है।

अनुबंध–2

गत तीन वर्षों के दौरान (होटल वार) निवल लाभ/हानि

(रुपए लाखों में)

क्रम सं०	एकक का नाम	निवल लाभ/हानि		
		1989–90	1990–91	1991–92
1.	अशोक होटल नई दिल्ली	233.30	(–) 40.36	(–) 87.90
2.	कनिष्क होटल, नई दिल्ली	135.35	(–) 21.97	(–) 63.39
3.	जनपथ होटल, नई दिल्ली	53.85	10.42	(–) 77.61
4.	कुतुब होटल, नई दिल्ली	30.41	28.30	(–) 4.58
5.	लोधी होटल, नई दिल्ली	34.79	(–) 13.26	(–) 38.11
6.	रणजीत होटल नई दिल्ली	(–) 27.67	(–) 52.47	(–) 82.88
7.	अशोक यात्री निवास, नई दिल्ली	124.23	90.83	43.78
8.	सम्राट होटल, नई दिल्ली	(–) 101.95	(–) 235.33	(–) 224.89
9.	होटल आगरा अशोक, आगरा	4.44	(–) 3.96	3.60
10.	होटल जयपुर अशोक, जयपुर	4.61	2.64	(–) 7.05
11.	होटल वाराणसी अशोक, वाराणसी	(–) 17.25	(–) 9.70	3.56
12.	लक्ष्मी विलास पैलेस होटल, उदयपुर	22.87	30.55	51.87
13.	होटल जम्मू अशोक, जम्मू	(–) 0.08	1.87	(–) 19.05
14.	होटल औरंगाबाद अशोक, औरंगाबाद	4.43	6.79	7.34
15.	होटल खजुराहो अशोक, खजुराहो	2.74	(–) 9.73	(–) 3.19
16.	होटल एयरपोर्ट अशोक, कलकत्ता	113.91	2.68	(–) 4.05
17.	होटल कलिंग अशोक, भुवनेश्वर	(–) 20.88	(–) 28.89	(–) 30.42
18.	होटल पाटलिपुत्र अशोक, पटना	(–) 25.38	(–) 43.08	(–) 29.56
19.	होटल बोधगया अशोक, बोधगया	(–) 9.77	(–) 12.50	6.11
20.	होटल अशोक, बंगलौर	8.57	(–) 66.91	(–) 85.01
21.	कोवलम अशोक बीच रिसार्ट, कोवलम	22.29	9.03	2.14
22.	ललिता महल पैलेस होटल, मैसूर	34.48	35.21	57.64
23.	होटल हसन अशोक, हसन	10.62	6.99	12.61
24.	होटल मदुरै अशोक, मदुरै	6.79	(–) 0.14	(–) 7.03
25.	टेम्पल बे अशोक बीच रिसार्ट, मामल्लापुरम	0.04	(–) 4.42	(–) 7.29
		644.74	(–) 317.49	(–) 583.35

टिप्पणी : होटल मनाली अशोक, मनाली वर्तमान वर्ष में 20 मई, 1992 को चालू किया गया था इसलिए इसे विवरण में शामिल नहीं किया गया है।

अनुबंध–3

भारत पर्यटन विकास निगम के दिल्ली स्थित होटलों में एक वर्ष से अधिक पुरानी बकाया राशियों के संबंध में श्रेणी-वार स्थिति

क्रम संख्या	एकक/प्रभाग	*सरकार	गैर-सरकारी पार्टियां	लाइसेंसधारी	यात्रा एजेंट	कार्डधारी	**अन्य	कुल बकाया राशि
								(रुपए लाखों में)
1.	होटल अशोक	93.79	58.87	31.38	10.46	2.89	11.71	209.10
2.	होटल सम्राट	59.60	10.24	24.18	8.36	1.65	0.55	104.59
3.	होटल कनिष्क	23.02	10.62	0.12	28.70	1.17	3.20	66.83
4.	होटल कुतुब	1.12	29.56	0.96	7.50	0.45	0.62	40.21
5.	होटल जनपथ	73.77	4.89	0.37	7.82	2.89	6.53	96.27
6.	होटल लोधी	23.18	2.32	8.53	3.82	0.83	3.57	51.25
7.	होटल रणजीत	31.30	0.42	7.97	5.00	0.06	3.47	48.22
8.	अशोक यात्री निवास	3.52	—	7.02	0.01	0.03	1.13	11.71
	जोड़	316.30	116.93	80.53	71.67	89.7	30.78	628.18

*इसमें केन्द्र सरकार, राज्य सरकार तथा सार्वजनिक उपक्रम सम्मिलित हैं।

**इनमें व्यक्ति, गैर सरकारी हवाई कम्पनियां और राजदूतावास सम्मिलित हैं।

श्री शंकर दयाल सिंह : सभापति जी, हमारा जो प्रश्न है, इसके दो पहलू हैं। पहला तो वित्तीय स्थिति जो है इसके संबंध में है कि आइ०टी०डी०सी० के होटलों को बराबर घाटा क्यों लगता है और दूसरा इसका है कि घाटा लगने के बावजूद भी इतनी बड़ी राशि जो लोगों के पास या संस्थाओं के पास है या राज्य और केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों के पास बकाया है, उनकी वसूली में ढिलाई क्यों होती है? मैं सरकार से यह जानना चाहूंगा कि आपने जो यहां विवरण प्रस्तुत किया है, उसमें आपने स्वयं देखा होगा कि 25–26 होटलों का जो विवरण आपने दिया है उसमें से आइ०टी०डी०सी० के 14 होटल ऐसे हैं जिनमें 1990–91 में घाटा लगा और 1991–92 में 14 से यह संख्या 16 हो गई, अर्थात् 16 होटलों को घाटा लगा और घाटे की राशि 1990–91 में 317.49 लाख थी जबकि 1991–92 में 583.35 लाख का घाटा हुआ यानि 265.86 लाख का अधिक घाटा हुआ।...

MR. CHAIRMAN: Why don't you ask the question?

श्री शंकर दयाल सिंह : It is necessary to give the background and, therefore, I want to explain it to him. I put the direct question now.

मैं इन दो बातों की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं। पहला यह कि जो होटल आपके नुकसान में चल रहे हैं, उन को नुकसान समाप्त हो या वे लाभ में चलें, उस के लिए आप क्या उपाय कर रहे हैं और दूसरी बात यह है कि जिन लोगों के कारण घाटा होता है, आपने कुछ ऐसी मानिटरिंग की है जिससे पता चले कि यह घाटा क्यों होता है, इनके कारण क्या हैं, इसके लिए आपने किनको दोषी पाया है?

श्री गुलाम नबी आजाद : माननीय सभापति जी, माननीय सदस्य ने बहुत ही अच्छे सवाल पूछे हैं। पहला है सवाल

जो अपने बताया है कि जहां तक आई० टी०डी०सी० के होटल्स हैं, इनमें से तक रीबन 14 होटल्स में इस वक्त नुकसान है...

श्री शंकर दयाल सिंह : 16 में है। 1990-91 में 14 और 1991-92 में 16 में...

श्री गुलाम नबी आजाद : इसके जो घाटा है वह 1989 से अहिस्ता शुरू हुआ है। उसके बहुत सारे कारण हैं। जो होटल इंडस्ट्री है, यह बहुत ही सेंसिटिव इंडस्ट्री है। देश के अंदर या देश के बाहर अगर कोई ऐसी घटनाएं होती हैं तो उससे डाइरेक्टली टूरिज्म इंडस्ट्री को नुकसान होता है। जब टूरिज्म इंडस्ट्री को नुकसान होता है तो उसका डाइरेक्टली होटल पर असर पड़ता है। कुछ कारण मैं बताना चाहता हूं पिछले तीन चार वर्षों में क्योंकि पिछले तीन-चार वर्ष से ऐसा हुआ तीन साल पहले 18 होटल प्राफिट में थे। उसके पहले 2 सालों में 14 के करीब प्रॉफिट में थे। अहिस्ता-आहिस्ता घटकर ये 8 या 9 तक पहुंच गए। तो उसके जो मुख्य कारण हैं, पिछले तीन सालों में क्या कारण हैं जैसा मैंने पहले कहा देश में कुछ घटनाएं हुई, दुर्भाग्य से पिछले तीन वर्षों में हमारे देश में ऐसी घटनाएं हुई जिनके कारण यह असर पड़ा। सबसे पहले तो काश्मीर उसके बाद पंजाब और असम आज से तीन साल पहले से इनपर असर पड़ा है। उसके बाद पंजाब और असम ठीक हुआ लेकिन कश्मीर का सिलसिला अभी जारी है। इसी तरह से एयरबस 320 एक कारण बनी आज से दो साल पहले जिसकी वजह से लोकल टूरिज्म पर भी बहुत असर पड़ा, बाहर के टूरिस्ट जिनका कनेक्शन था वे भी नहीं आ पाये। इसी तरह से आज से दो-ढाई साल पहले मंडल कमीशन को लेकर दिल्ली में, नार्थ इंडिया में और विभिन्न राज्यों में जो दंगे हुए उसका भी प्रभाव होटल इंडस्ट्री पर पड़ा। इसके साथ-साथ जब ये तमाम चीजें चल रही थी देश के अंदर तो यू.एस.ए., यू.के., फ्रांस और जापान के अपने यहां के एडवाइजर्स ने अनाउन्स किया, उनके यहां के टूरिस्ट्स को, यहां आने से रोका गया। हमारा देश ऐसा है जहां पर ज्यादा से ज्यादा टूरिस्ट आते हैं। इसके साथ-साथ इसी बीच में गल्फ वार हो गई। इस की वजह से भी इन्टरनेशनल टूरिस्ट बहुत कम हो गये। दूसरे देश में जाने लगे। इसके साथ गल्फ कंट्रीज को अपनी फलइट्स विड्रा करनी पड़ी। इसकी वजह से टूरिज्म और होटल इंडस्ट्री पर बहुत असर पड़ा। इसके साथ-साथ पुराने यू.एस.एस.आर. में जो घटना हुई, वहां जो डवलपमेंट हुआ उसका भी असर पड़ा। इस्टर्न यूरोप में जो डवलपमेंट हुआ उसका भी हमारे देश पर टूरिज्म इन जनरल होटल इंडस्ट्री इन पटीकुलर, इसमें भी असर पड़ा।

MR. CHAIRMAN: They will ask more questions. (*Interruptions*). Better leave it there. Otherwise, you will repeat them.

SHRI V. GOPALSAMY: It is another way of evading.

श्री गुलाम नबी आजाद: यह इनके पहले क्वेश्चन का जवाब था। जहां तक इनके दूसरे क्वेश्चन का जवाब है...

श्री शंकर दयाल सिंह : किन अधिकारियों को इसके लिए दोषी पाया गया यह मैं जानना चाहता था?

श्री गुलाम नबी आजाद : इसमें अधिकारियों का मामला नहीं है। रूल में ऐसे-ऐसे अधिकारी हैं जो हमारी पकड़ से बाहर हैं, आपकी पकड़ से भी बाहर है। मैं फर्माना चाहता हूं कि यहां होटलों में जो बकाया है वह तकरीबन 31 करोड़ रुपया बकाया है पिछले कुछ सालों से पूरे आई.टी.डी.सी. पर। पिछले एक साल से सिर्फ दिल्ली के जो होटल हैं उनमें 6 करोड़ 28 लाख बकाया है। किस तरह से यह वापस लिया जाए इसके लिए मैं मुख्य मुख्य चीजों की तरफ आपका ध्यान

दिलाना चाहता हूं। उनसे पैसा वापस लेने का जो तरीका है यह बराबर जारी रहता है, एक-दो दिन का मामला नहीं है।

MR. CHAIRMAN: I trink the Minister may now conclude.

SHRI V. NARAYANASAMY: The Ministers should also give a time-bound reply.

MR. CHAIRMAN: They will ask other questions.

SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, the following steps have been taken by the Management.

Firstly, the normal procedure for realising the money is the periodical reminders both at the unit as well as corporate levels. Secondly, periodical review of the outstandings both at the unit as well as corporate levels. Seeking assistance from administrative Ministry in so far as the outstandings against the Central Government departments and public undertakings are concerned. Personal contact with the parties.

Sir, the operative part of the question which the hon. Member has asked is what concrete steps the management and the Government have taken against the parties and also agaist the officers. The procedure adopted for the last three months is, sending reminders thrice within 60 days and after 75 days the General Managers of the hotels have been told to refer to the matter to the senior-most managers and stop the credit facility. Contact nationalized banks for credit through credit cards; and, to initiate legal action both against the parties and the staff of the hotel.

MR. CHAIRMAN: The Minister has answered all the questions! Therefore, I think there is no scope for the second supplementary!

श्री शंकर दयाल सिंह : सभापति जी, मंत्री महोदय ने जो जवाब दिया उस जवाब में और जो इन्होंने स्टेटमेंट दिया है, दोनों में मेल नहीं खा रहा है। इसलिए मेल नहीं खा रहा है कि इन्होंने कहा है कि इन-इन कारणों के कारण होटल व्यवसाय में मंदी रही, लेकिन आपकी फीगर कह रही है कि 1990-91 में आपका टर्नओवर 7703.23 लाख का था और 1991-92 में आपका टर्नओवर बढ़कर 8424.48 लाख हो गया। इससे साबित होता है कि आपका व्यवसाय बढ़ा है, वृद्धि हुई है, घटा नहीं है। इसलिए मैं सरकार से सीधे तौर से केवल दो बातें जानना चाहूंगा और पहली बात यह है कि जो आई. टी.डी.सी. के यानी सरकारी होटल हैं उनका उद्देश्य क्या है, व्यवसाय है या आमोद-प्रमोद है या पर्यटकों को यहां लाना-बैठाना है या दूसरे किसी काम के लिए उनको उपयोग में लाना है? इसके साथ ही एक बात मंत्री महोदय ने बड़े केजुअल वे में जवाब दिया कि व्यक्तिगत बकाया राशियां वसूल करना एक सतत प्रक्रिया है और व्यक्तिगत सम्पर्क करना तथा जहां-कहीं आवश्यक पाये जाने पर कानून कार्यवाही करना है, इसलिए सरकार ने विगत दो वर्षों में किन-किन लोगों या संस्थानों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही की है और उसमें सरकार का दो सालों में कानूनी कार्यवाही करने में कितना खर्च हुआ है और कानूनी कार्यवाही करने के बाद दो सालों में वसूली में कितना पैसा किन-किन जगहों से प्राप्त हुआ है?

श्री गुलाम नबी आजाद : महोदय, जहां तक सेकेन्ड पार्ट का सवाल है, तकरीबन मेरे ख्याल में 108 केसेज में अभी तक कार्यवाही हुई है जिनको लीगल नोटिस दी गई है। इस पर कितना खर्चा आया है, इसका तो मैं अभी उत्तर नहीं दे सकता हूं, लेकिन आनरेबल मेम्बर को उत्तर दे दूंगा।

MR. CHAIRMAN: You can give the answer later, probably.

SHRI VIREN J. SHAH: Give us the figures about the recovery, at least.

श्री गुलाम नबी आजाद : रिकवरी तो एक कंटीन्यूअस प्रोसेस है। जैसा मैंने कहा कि हमने कुछ स्टेप्स लिये हैं।

SHRI VIREN J. SHAH: For two years... (*Interruptions*) ...

श्री गुलाम नबी आजाद : उसका उत्तर मैं दे दूंगा।

MR. CHAIRMAN: Shri Gopalsamy.

SHRI V. GOPALSAMY: Sir, Despite the fact that the Committee on Public Undertakings has passed very severe strictures adn made adverse comments on the working of the ITDC, the total outstanding amount, as per the statement of the Minister, is to the tune of Rs. 628 crores. Nowadays the ITDC gets its revenue from the Government side and also, mainly, from the travel trade agencies. The officials of the ITDC are hand in glove with these agencies and behind-the-scene deals are going on. I would like to know from the hon. Minister whether any cases have been registered against those defaulters. If not, why? If the answer is yes, I would like to know from the hon. Minister whether credit facilities are still being extended to those people against whom cases have been made. I want a straight reply from the hon. Minister.

SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, as far as credit facilities are concerned, I have already said that since November 1992 decision has been taken that in future, if any person has not paid within 75 days, credit facilities would be stopped for him.

SHRI V. GOPALSAMY: My question is whether any cases have been registered.

SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, I have already said that as many as 100 cases have been registered.

SHRI V. GOPALSAMY: I wanted to know whether credit facilities are extended also after filing the cases against those people.

... (*Interruptions*) ...

SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, that I will have to check up.

MR. CHARMAN: It is very unlikely.

SHRI V. GOPALSAMY: Sir, he is evading my question... (*Interruptions*) ...My charge is that the Government is extending credit facilities to those people against whom cases have been filed. This is nothing but cheating the people.

MR. CHAIRMAN: The Minister will look into it and reply to him.

SHRI GHULAM NABI AZAD: If the hon. Member has any specific case, I will definitely look into it and examine it.

SHRI V. GOPALSAMY: It is a fraud committed against the people.

श्री ईश दत्त यादव : मान्यवर, सभापति जी, माननीय मंत्री जी ने बतलाया कि दिल्ली के होटलों पर 6 करोड़ 28 लाख रुपये बकाया है और पूरे देश में 31 करोड़ रुपये बकाया हैं। मान्यवर, मैं सीधा प्रश्न पूछ रहा हूं कि अगर किसानों के ऊपर बकाया रहता है, ट्रैक्टर का, ट्यूब वैल का तो उसके लिये उत्पीड़नात्मक कार्यवाही सरकार की ओर से की जाती है। इसमें केंद्रीय सरकार और राज्य सरकारों के सारे उपक्रम, व्यक्ति, गैर-सरकारी हवाई कंपनियां और राजदूतावास हैं, जिनके ऊपर इतनी अधिक रकम बकाया है। तो इनसे वसूली के लिये सरकार क्या कार्यवाही कर रही है, क्या कोई उत्पीड़नात्मक कार्यवाही भी सरकार करेगी, उनको अरेस्ट करने की भी कार्यवाही करेगी जिस तरह से किसानों को अरेस्ट किया जाता है, बकाया वसूली के लिये?

बी पार्ट मान्यवर, मेरा यह है कि जब जनता दल की सरकार थी और

चौधरी देवीलाल इस विभाग के मंत्री थे, जिसके आप मंत्री थे, तो उन्होंने एक योजना बनाई थी कि इन पंच सितारा होटलों, फाइव स्टार होटलों में गांव के लोग, किसान, धोती पहनने वाले जब रुकेंगे तो उनको 50 परसेंट की रियायत दी जायेगी । तो मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि क्या आप भी इस तरह की कोई रियायत गांव के रहने वालों को, किसानों को, धोती पहनने वालों को देने पर विचार कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं? अगर जारी है तो आज तक कितनी रियायत दी गयी ?

श्री गुलाम नबी आजाद : सर, जो पहला प्रश्न है, मैं पहले ही कह चुका हूं, शंकर दयाल सिंह जी को कि सरकार आगे ही फैसला दे चुकी है कि जो डिफाल्टर्स हैं, जो पैसा नहीं देंगे और 75 दिन से ज्यादा तक जिन्होंने नहीं दिये हैं, उनके खिलाफ कार्यवाही शुरू की गयी है । जहां तक धोती का सवाल है, मुझे लगता है कि माननीय सदस्य जी आज किसी बड़े धोती बनाने वाले से बात करके आये हैं । सर, होटलों में कंसेशन धोती के नाम पर दी जाय तो हिन्दुस्तान में धोतियां गायब हो जायगी और सब लोग होटलों में पहुंच जायेंगे । मैं वैसे, माननीय सदस्य जी का आदर करते हुये यह कहूंगा कि फाइव स्टार होटलों में कहीं भी, गांव या शहर के नाम पर कोई भी डिसक्रिमिनेशन नहीं किया जाता है और जो भी आदमी फाइव स्टार होटल में पैसा देगा उसे खाना उपलब्ध होगा ।... (व्यवधान)... इसकी मुझे पूरी डिटेल नहीं मालूम है । लेकिन जो माननीय देवी लाल जी ने स्कीम जारी की थी, मुझे जहां तक जानकारी है, उसमें ज्यादा लोग नहीं आते थे । क्योंकि दिल्ली में खाली होटलों में आधी कीमत पर खाना खाने के लिये आना ही मुश्किल है । दिल्ली में आने के जो जहाज का साधन है, बाकी जो साधन है, जब तक वे भी उपलब्ध नहीं है तब तक सीधे होटलों में वे खाना खाने के लिये नहीं आयेंगे । इसके लिये दूसरे साधन नहीं हैं । वह कोई सक्सेसफुल स्कीम नहीं रही ।

SHRI G. SWAMINATHAN: Sir, the hon. Minister has been talking of the general conditions because of which the ITDC hotels have not been making profits. I would like to know why even under those adverse conditions some of the ITDC hotels like the Lalit Mahal Place, the Hassan Ashok, the Laxmi Vilas Palace, Udaipur, have made profits and why some other hotels have not made profits Has it been examined by the Government? This is one.

Two, Sir, some of the private sector hotels like the Mayura Sheraton in Delhi, I understand, are making profits while the Ashoka Hotel in Delhi is making a loss. Has the hon. Minister enquired into how private sector hotels are making profits and how your ITDC hotels do not make profits?

The third question is whether he has calculated.....

MR. Chairman: Three questions.

SHRI G. SWAMINATHAN: ..... out of Rs. 628 lakhs how much of bad and doubtful debts are there.

SHRI GHULAM NABI AZAD: Sir, as far as the third part is concerned, I inform the hon. Member that it is very difficult for me to say off-hand how much of it is bad and doubtful debts.

As far as the second part is concerned, the hon. Member has asked why private hoteliers are in a position to make much more profits than the ITDC hotels. There are a number of reasons. One reason is that the ITDC is not guided solely by private considerations as is done by private hoteliers. The ITDC hotels have to keep two things in mind—the social objective and the Government policies with regard to development of backward areas. There are some areas where the private hoteliers would not like

to go. But it is the responsibility of theGovernment to keep the regional balance. So, if there is no hotel in one part of the country, it is the duty of the Government to maintain the reigonal balance whether it runs in profit or not. There are other reasons also. National integration is also one of the factors which the Government must bring about. Another reason is that the ITDC is vulnerable to exploitation by vested interests both from within and outside. I must admit that. The private hoteliers are free to throw anybody of the management or out of the employment. It is not possible as far as the public undertakings are concerned, because of the unions and the policies of the Government. As far as the Government hoteliers are concerned, there is a multiplicity of authority. They have to face Parliament; they have to fact the PAC and they have to face the COPU. The other hoteliers do not have to face such authorities. There is also a lack of invetment which is a very major factor. The private hoteliers have a lot of money to invest. Lastly, as far as the skilled staff is concerned, because the Government has some constraints, we cannot go beyond the parameters fixed by the Government. These parameters do not apply to the private hoteliers.

श्री प्रमोद महाजन : सभापति महोदय, मंत्री जी ने अभी अंत में जो उत्तर दिया है, उसके संबंध में मैं पूरक प्रश्न पूछना चाहूंगा। सिद्धांत रूप में सार्वजनिक उपक्रमों के खिलाफ मैं नहीं हूं लेकिन सार्वजनिक उपक्रम उस क्षेत्र में हों जिस क्षेत्र में उसकी आवश्यकता हो। होटल चलाना, यह सरकार का काम नहीं है, आवश्यकता नहीं है। यह भी सच्चाई नहीं है कि आप वहां होटल चला लें जो पिछड़े इलाके हैं। आपने जिस मनाली होटल का जिक्र किया है, आपकी जानकारी के लिए वहां पहले से ही 250 होटल हैं और 250 होटल होने के बाद आप 251वां होटल वहां खोल कर केवल जनता का घाटा बढ़ा रहे हैं। इसलिए मैं सिद्धांत रूप में आपसे यह पूछना चाहूंगा और मुझे आशा है कि वित्त मंत्री जी भी इसमें मेरी सहायता करेंगे कि अनावश्यक रूप से जनता को जो घाटा हो रहा है इसको देखते हुए क्या सरकार यह सारे होटल बेच देगी और इसको निजी क्षेत्र में चला देगी? पांच सितारा होटल चलाना सरकार का काम नहीं है, आप सरकार को चलाइये और होटल पूर्ण रूप से निजी क्षेत्र में चलाए जाएं।

DR. CHAIRMAN: You have made your point very effectively.

श्री गुलाम नबी आजाद : सर, मैं महाजन जी से बराबर सहमत हूं कि ... (**व्यवधान**)

SHRI DIPEN GHOSH: In the matter of privatisation of the public scetor organisations, both of them are together.

श्री गुलाम नबी आजाद : अभी मुझे पूरा तो करने दीजिये प्लीज (**व्यवधान**)

SHRI DIPEN GHOSH: That is why they are planning to hand over rower to them.

SHRI YASHWANT SINHA: You are wasting the poor man's money on hotels.

SHRI DIPEN GHOSH: Actually they are implementing their policy.

SHRI V. NARAYANASAMY: We are to attract more tourists in order to get foreign exchange. You have forgotten that point. The Government is short of foreign exchange.

MR. CHAIRMAN: Let him reply please.

श्री गुलाम नबी आजाद : और होटल इंडस्ट्री तो बाकी लोग भी चला सकते हैं लेकिन उसका कारण है कि... (**व्यवधान**) जब होटल इंडस्ट्री शुरू हुई थी पहले वक्त में, उस वक्त गवर्नमेंट से ही शुरू हुई थी जिसका मैंने पहले उत्तर दे दिया कि... (**व्यवधान**)

SHRI VIREN J. SHAH: Hotel industry....

SHRI GHULAM NABI AZAD: Please let me complete.

उस वक्त टूरिज्म को अट्रैक्ट करने का, उनको साधन पहुंचाने का, उनके रहने की व्यवस्था जो थी वह होटल इंडस्ट्री और आई.टी.डी.सी. करता था। यह अब की शुरूआत है कि प्राइवेट इंटरप्रेन्योर्स और प्राइवेट होटेलियर्स इसमें आये हैं.. (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: Do you want to answer this policy question?

Are you going to answer?

श्री गुलाम नबी आजाद : जहां तक प्रमोद जी ने बताया है, हमने यह पहल ही निर्णय लिया है। दो ग्रुप्स होटल्स के बनाये गये थे दो साल पहले, लोधी, आगरा, खजुराहो और वाराणसी होटल्स का एक ग्रुप था और दूसरा जनपथ, जयपुर, उदयपुर और औरंगाबाद का ग्रुप था। इसके लिए फारेन बैंक्स ने एक इवैल्युएशन किया था। लेकिन इस वक्त सी.पी.डब्ल्यू. डी. के द्वारा इनका इवैल्युएशन चल रहा है। वह एवैल्युएशन कंप्लीट होने के बाद में इसमें निर्णय लिया जाएगा। इस बारे में 40 प्रतिशत जो इक्विटी होगी वह फारेन इक्विटी होगी और 20 प्रतिशत प्राइवेट, पब्लिक से और 40 प्रतिशत होगी आई.टी.डी.सी. की इक्विटी।

एयरबस-300 की सेवाओं को पुनः आरंभ किया जाना

*442. **श्री अजीत जोगी** :

श्री छोटू भाई पटेल : †

क्या नागर विमानन और पर्यटन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि एक लम्बे अन्तराल के बाद एयरबस-300 की सेवाओं को पुनः आरंभ किया गया है;

(ख) यदि हां, तो उक्त विमानों की मरम्मत में इतना विलम्ब होने के क्या कारण हैं;

(ग) उक्त एयरबस विमानों को न चलाये जाने के कारण कितनी हानि हुई है; और

(घ) इस हानि की भरपाई के लिए क्या कदम उठाये जा रहे हैं?

नागर विमानन और पर्यटन मंत्री (श्री गुलाम नबी आजाद) : (क) और (ख) एयर इंडिया और इंडियन एयरलाइन्स दोनों के पास एयरबस ए-300 का विमान बेड़ा बिना किसी अन्तराल के प्रचालन में रहा है।

(ग) और (घ) ये प्रश्न नहीं उठते।

श्री छोटू भाई पटेल : इंडियन एयरलाइन्स और एयर इंडिया के वेरियस आस्पेक्ट्स को स्टडी करने के लिए और इनको रीस्ट्रक्चर करने के लिए क्या सरकार ने एक हाई पावर कमेटी बनायी है और यह हाई पावर कमेटी जो बनी है तो क्या इसने रिपोर्ट पुट अप की है? अगर रिपोर्ट पुट अप की है तो इसके मेजर रिकमेंडेशंस क्या हैं? नम्बर दो, फ्लीट रिटायरमेंट के लिए अभी अभी नये नार्म्स क्या बने हैं? नम्बर तीन, ए-300 एयरबस क्या आप रिप्लेस करने जा रहे हैं और अगर रिप्लेस करने जा रहे हैं तो किस एयरक्राफ्ट के जरिये रिप्लेस करने जा रहे हैं?

श्री गुलाम नबी आजाद : जहां तक पहला प्रश्न आपने बताया है, उसका मैं माननीय सदस्य को उत्तर लिखित में भेज दूंगा। जहां तक दूसरा सवाल आपने बताया है ए-300 या एयरबस या हमारे जहाजों की एज के बारे में, तो इसकी एजमें पहले तो कोई सीमा नहीं थी, 30-30 साल से भी हवाई जहाज हमारे देश में उड़ रहे थे। लेकिन अब इसको घटाकर हमने 15 साल किया है,

†सभा में यह प्रश्न श्री छोटू भाई पटेल द्वारा पूछा गया।